17

पीपल (फाइकस रेलीजियोसा)

पीपल वृक्ष सम्पूर्ण भारतवर्ष में पाया जाता है। यह हमारे प्रदेश में सड़कों के किनारे, गाँवों में कुओं के आस-पास व मन्दिर परिसर में मिलता है। छाया, पर्यावरण संरक्षण, धार्मिक दृष्टिकोण व हरी पत्तियाँ पौष्टिक व रूचिकर चारा होने के कारण सड़कों के किनारे, धार्मिक स्थलों के परिसर एवं गांवों में पीपल का रोपण व्यापक रूप से किया जाता है।

पीपल सदापर्णी वृक्ष है किन्तु शुष्क या खुश्क जलवायु में अल्पकाल के लिए पर्णविहीन हो जाता है। पीपल के लिए विशिष्ट जलवायु की आवश्यकता नहीं होती। यह उच्च तापमान वाले स्थानों से लेकर हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में पाया जाता है। पीपल पर पाले का असर नहीं पड़ता है। जनवरी से मार्च के मध्य नई पत्तियाँ आ जाती हैं।

पत्तियाँ व टहनियाँ हाथियों व मवेशियों के चारे के काम आती हैं। दूध जमकर गटापारचा की तरह हो जाता है। लाख मार्च, अप्रैल में एकत्र कर बेचते हैं। छाल, दूध व फल आयुर्वेदिक दवाओं में प्रयुक्त होता है।

पीपल के वृक्षों से काटी गई 2 मीटर लम्बी व 5 सेंटीमीटर व्यास की कलम आसानी से उग जाती है। कटिंग में जड़ पैदा करने वाले हारमोन्स लगाकर वर्षा ऋतु में रोपित करते हैं।

Uttar Pradesh State Biodiversity Board

Department of Environment, Forests & Climate Change, Government of Uttar Pradesh

East Wing, III Floor, A-Block, PICUP Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow-226 010, U.P., INDIA

Phone : +91 522 4006746, +91 2306491, E-mail: upstatebiodiversityboard@gmail.com

Website: www.upsbdb.org

© Uttar Pradesh State Biodiversity Board

Year of Publication : 2021

17

बेल (ईगल मार्मेलोज)

बेल प्रजाति उत्तर भारत के शुष्क व मिश्रित वनों तथा विन्ध्य पर्वत श्रेणियों में पायी जाती है। इसके फल व पत्तियों का धार्मिक दृष्टिकोण से विशेष महत्व होने के कारण शिव मन्दिर प्रांगण में भी इसका रोपण किया जाता है। प्राकृतिक क्षेत्र में तापमान 45 डिग्री सेंटीग्रेड व 1.7 डिग्री सेंटीग्रेड के मध्य तथा वर्षा 570 मिलीमीटर से 2,000 मिलीमीटर तक होती है। दोमट व नम क्षेत्रों में बेल की वृद्धि अच्छी होती है। विन्ध्य क्षेत्र की कंकरीली व पथरीली मिट्टी में भी यह पाया जाता है, किन्तु इस क्षेत्र में वृद्धि उतनी अच्छी नहीं होती है।

इसकी ऊँचाई 10 मीटर तक होती है। तीस वर्ष में बेल वृक्ष पूरी ऊँचाई प्राप्त कर लेता है। बेल वृक्ष हरा–भरा और घनी छाया देने वाला होता है। शाखाओं में छोटे तथा सीधे कांटे होते हैं। बेल में सूखा सह सकने की क्षमता है। पाले का इस पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है। बहुत थोड़े समय के लिए यह पर्णविहीन हो जाता है परन्तु मई–जून में इसमें नयी पत्तियाँ पुनः आ जाती हैं। यह अच्छा कॉपिस करता है। मार्च और अप्रैल के महीने में इसमें फूल आते हैं। दिसम्बर तक बेल का फल बढ़कर पूरे आकार का हो जाता है। फल अप्रैल में पकने लगता है। भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली में बेल फल का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। इसका गूदा पेट की बीमारियों और अपच आदि में दवा के रूप में उपयोग में लाया जाता है। इसके गूदे से स्वादिष्ट शर्बत बनाया जाता है। बेल फल का मुरब्बा भी टॉनिक की तरह तथा पत्तियों का चारे के लिए भी उपयोग किया जाता है।

राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण
National Biodiversity Authority, India
2003

जहाँ है हरियाली ।
वहाँ है खुशहाली ॥

उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड
U.P. STATE BIODIVERSITY BOARD